सम्पादक की कलम से

सरल

स-सत्, र-रश्मी, ल-लय अर्थात् सत रश्मी की लय।

अशोक 'मानव'

जिसका पूर्ण अर्थ हाता है विषय का भेदन करने की सत रश्मी की लय। सरल विषय का वह सरलतम मार्ग जो विषय का वैज्ञानिक सूत्र है। जिससे विषय का भेदन सुनिश्चित होता है। सरल सत (मूल मार्ग) की रश्मी (किरण) को लयबद्ध करना। सरल जीवन जीने की सर्वोत्तम प्राकृतिक कला है। सरल करने पर हर प्रश्न का उत्तर मिल जाता है। सरल रहने पर निर्माण होता है। सरल रहने पर नकारात्मक गति शान्त हो जाती है जो जीवन को सुरक्षित करने का उत्तम तरीका है। सरल रहने से सभी सम्बन्ध अच्छा बना रहता है। सरल प्रकृति की गति के साथ चलने की उत्तम कला है। सरल शान्त अवस्था का एक नाम है।

सरलता से पारिवारिक जीवन का सम्बन्ध मधुर बना रहता है। सरलता से हर कार्य आसान हो जाता है। सरलता से स्वाभाविक विकास निरन्तर होता रहता है। सरल व्यक्ति की शरीर रूपी जमीन उपजाऊ होती है। जिसमें दूसरे द्वारा प्रेसित भाषा सक्रिय होकर क्रियाशील हो जाती है। सरल व्यक्ति की सुन्दरता आकर्षक होती है। सरल बनने के लिए व्यक्ति को अपने स्वभाव के अनुसार चलना चाहिए। ऐसा करने से व्यक्ति अपने सत् तत्व की रश्मी को उत्सर्जित करता रहता है जो शरीर के अन्दर एक लय बनाती है। यह लय आवश्यकता को अपने से जोड़ती है, जो विषय हानि पहुँचाने वाला होता है उसे अपने से नही जुड़ने देती है। स्वभाव के अनुसार चलते रहने के लिए किसी के शब्दो से न प्रभावित हो न ही अपने विपरीत हो रहे कार्य से उत्तेजित हो, वही निर्णय ले जो अपने स्वभाव के अनुसार हो, विषय में जो बदलाव चाहते हो उसे शब्दों से न व्यक्त करें , सिर्फ उसका भाव छोड़ दे तो विषय को बदलने के लिए आप का भाव क्रियाशील हो जाता है जो कुछ समय बाद उसमें बदलाव करने लगता है। यदि उसे शब्दों में व्यक्त किया जाता है, तो टकराहट बनने लगती है जो उत्तेजित करती है और व्यक्ति अपने स्वभाव से हटने लगता है। यह क्रिया प्राकृतिक होती है जब किसी का विरोध किया जाता है तो उसके अन्दर क्रोध पैदा होने लगता है जिसमें आप का प्रेसित भाव विकास नही कर पाता है बल्कि जलकर नष्ट हो जाता है। सिर्फ भाव छोड़ देने में व्यक्ति का स्वभाव सुरक्षित रहता है और जिसके लिए भाव छोड़ा जाता है उसका भी स्वाभाविक विकास होता है। इस प्रकार सरलता के साथ किया गया कार्य पारिवारिक सम्बन्धों को सदैव मधुर बनाये राता है। सरलता से व्यक्ति खुद को और अपन परिवार को सुरक्षित रख सकता है। सरल बने रहन में नकारात्मक ऊर्जा प्रभावहीन हो जाती है। किसी गति को रोकने के लिए 'सरल' (शान्त) प्राकृतिक उपाय होता है। रूकावट पैदा करने पर कोई भी गति तेज हो जाती है जो ज्यादा प्रभावित करती है। सरल बने रहने पर गति आगे बढ़ जाती है उसे पनपने के लिए उचित जलवायु नही प्राप्त हो पाती है, सिर्फ हल्का एहसास देते हुए आगे निकल जाती है। जिससे व्यक्ति नकारात्मक ऊर्जा के प्रभाव से बच जाता है। इस प्रकार व्यक्ति सरल बनकर खुद को और अपने परिवार का सुरक्षित कर सकता है।

जीवन में अनेको विषय प्रश्न बनकर आते है जिसका निदान नही नजर आता है, यह समस्या लगभग सभी के जीवन में पायी जाती है। इसका निदान भी सरल बनकर किया जा सकता है। प्रकृति का बहाव सदैव मंजिल की तरफ ले जाता है पर जब व्यक्ति प्रकृति के इशारे को नही समझ पाता है उसके विपरीत जाने का प्रयास करता है तो विषय के प्रश्न का सही उत्तर नहीं प्राप्त कर पाता है। उदाहरणार्थ- बारिस का जल सरलता के साथ जिधर मार्ग पाता है उधर ही चलता जाता है। इस प्रकार चलते-चलते हमेशा के लिए अपना मार्ग बना लेता है जो नदी के नाम से जाना जाता है। उसका अस्तित्व स्थायी बन जाता है। ठीक इसी प्रकार मानव सरल बनकर अपने प्रश्न का उत्तर खोज सकता है। सरल रहने पर सत् रश्मी की लय स्वतः उत्तर की तरह बढ़ती रहती है जो उत्तर तक पहुँच जाती है। सरलता से प्राप्त उत्तर ही प्राकृतिक हल होता है जो जीवन का विकास करता है। सरलता प्रकृति की वह चाभी है जो जीवन के हर प्रश्न के ताले में लग जाती है। सरल रहने में अपने अन्दर से जो ऊर्जा निकलती है वह निर्माणात्मक होती है। इस समय की निकलने वाली रश्मी विषय की सत्यता को पहचानकर सम्बन्ध स्थापित करती है। मानव स्वभाव जब तक अपने प्रश्न का जवाब नहीं पाता है तब तक व्यथित रहता है। इससे बचने के लिए और अपने सवाल का जवाब पाने के लिए सरलता से उत्तम कोई तरीका नहीं होता है सिर्फ इसमें धैर्य की जरूरत होती है क्योंकि स्वाभाविक विकास के निर्माण में प्राकृतिक रूप कुछ समय लगता है। जैसे उसका निर्माण हो जाता है वैसे ही उसका फल या उत्तर सामने आ जाता है। विद्यार्थी जीवन में भी सरलता से पढ़ते रहने पर विषय धारण होता रहता है। परीक्षा के समय सरल बने रहने पर पढ़ा हुआ विषय याद आने लगता है। दबाव बनाये रखने पर पढ़ा हुआ विषय याद नही आता है। सरल विद्यार्थी जीवन की आवश्यक कला है। इस कला से अपने लक्ष्य तक आसानी से पहुँच सकते है। सवाल का जवाब प्रश्न में छिपा होता है। यदि सरलता से उसे खोजा जाय तो उसका जवाब मिल जाता है। सरलता से अबाधित रूप से व्यक्ति प्रकृति में छिपे उत्तर तक पहुँच जाता है। इस प्रकार 'सरल' हर जीवन की आवश्यक कला है। आप सब सरलता के साथ अपने आप को सरल बनाये रखे इसी शुभकामना के साथ।